धर्म एवं परलोकवाद

क्रूर एवं हिंसा के वातावरण में असीरियन सभ्यता धर्म के प्रभाव से उद्भव मान्यताएं विकसित न हो सकीं और न ही उनका राजनीतिक जीवन पर कोई विशेष प्रभाव ही पड़ा। यहाँ बेबिलोनियन देवी-देवताओं को ही मान्यता प्रदान की गयी किन्तु बेबिलोनियन राष्ट्रीय देव मार्दुक का स्थान असीरियन देवता अशुर को मिला। सपक्ष सूर्य चक्र उसका प्रतीक था किन्तु बाद में युद्ध देवता बनकर युद्ध एवं शान्ति दोनों में राष्ट्र का कल्याण करता था। इसकी अक्षय उदारता मनुष्य को समृद्धियाँ प्रदान करती थीं। अशुरबनिपाल द्वितीय के शासन काल में एक प्रस्तर चित्र में युद्ध बन्दियों को अशुर के समक्ष बलि देते हुए प्रदर्शित किया गया है। अशुरबनिपाल अपने लेखों में कहता है कि अशुर के विद्रोहियों एवे मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र करने वाले इन सैनिकों को मैने देवताओं के सम्मुख हवन कुण्डों में बलि दे दी। इससे मैंने देवताओं को प्रसन्न किया।'' अशुर का निवास अशुर नगर का मन्दिर था। इसकी पत्नी के रूप में निनलिल प्रतिष्ठित थीं। अन्य देवताओं में इआ, अनु, एनलिल, सिनु, शमश, बेलमार्दुक, नाबुइनुर्त, नर्गल आदि की उपासना की जाती थी। उनकी अधिष्ठात्री देवी निला प्रेम की प्रतीक थीं। राष्ट्र के पुरोहित के रूप में शासक देवता की उपासना करता था।

असीरियन धर्म अन्धविश्वास एवं अभिचारपरक था। इस धर्म में अशुभकारी एवं आभिचारिक शक्तियों को विशेष महत्त्व मिला था। इन शक्तियों से वे सदैव भयभीत हो जाते थे। इनसे बचने का एकमात्र उपाय मन्त्र-तन्त्र था। इन पर पुजारियों का एकाधिकार होता था। मन्त्रों को ताबीजों पर उत्कीर्ण कर दिया जाता था। कभी-कभी मन्त्रों के साथ-साथ अनेक प्रकार की आकृतियाँ भी उत्कीर्ण की जाती थीं। अभिचारक विशेषज्ञ संगीत द्वारा देवता को प्रसन्न करते थे स्तुति कराते थे तथा धार्मिक कार्यों के समय देव-मूर्तियों का जलाभिषेक कराते थे।

असीरियन घटनाओं के कार्य-कारण पर विश्वास करते थे। उनका विश्वास था कि क्रम से धारित होने वाली दो घटनाओं में पहली दूसरे का कारण होती है। शकुन विचारक भविष्यवाणी करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि वे अन्धलोक का अस्तित्व मानते थे जहाँ मृत्आत्मा को जाना पड़ता था। वहाँ उसके लौकिक कर्मों की जाँच हो जाती थी। दुष्कर्मी को घोर यातनाएं मिलती थीं।

कला एवं स्थापत्य

विभिन्न प्रान्तों एवं प्रदेशों के लूट-खसोट से प्राप्त सम्पत्ति का उपयोग सैनिकों के भरण पोषण के साथ-साथ असीरियन राजधानी तथा नगरों के वैभव एवं सौन्दर्य वृद्धि में किया गया। यहाँ के कलाकारों के सतत् प्रयास से निनिव, असुर आदि नगर विभिन्न प्रकार के भवनों, मूर्तियों प्रस्तर-चित्रों आदि से समलंकृत हो गये। इन्होंने भवन निर्माण में अधिक सक्रियता दिखलायी। इसलिए वास्तु का पर्याप्त संवर्द्धन हुआ। भवन निर्माण में ईंटों के साथ पत्थरों का प्रयोग भी होने लगा था। भवनों में मेहराब तथा स्तम्भ बनाये जाते थे। भवन आकार-प्रकार में विशाल होते थे तथा इन्हें प्रायः दो तीन मंजिलों तक ऊँचा बनाया जाता था। प्रत्येक भवन में कई बड़े-बड़े कमरे और हाल होते थे। राजकीय भवनों के द्वार पर

पशुओं की अतिविशाल मूर्तियाँ स्थापित की जाती थीं। दीवार, छत तथा फर्श को निविध प्रकार से अलंकृत किया जाता था। तिग्लैथपिलीसर प्रथम ने राष्ट्रीय देवअशुर के लिए कई मन्दिर बनवाया था। अशुरबनिपाल द्वितीय ने अपनी राजधानी कलाह में स्थापित कर वहाँ प्रसाद एवं मन्दिर बनवाए थे। राजप्रसाद की दीवारों पर युद्ध, मृगया तथा धार्मिक अनुष्ठानों के दृश्यों को अत्यन्त सजीवता के साथ उत्कीर्ण किया गया। शालमनेसर तृतीय के समय में अधिकांश भवन अशुर में बनवाये गये थे। नगर को सुरक्षा प्रदान करने के लिए एक खाई तथा दोहरी प्राचीर निर्मित कराई गई। इसमें थोड़ी-थोड़ी दूर पर तोरण बनाए गये थे। राज प्रासादों में द्वार मण्डप बनाये गये। सारगोन द्वितीय ने निनिव के समीप दुरू-शर्रूकिन नामक नगर बसाया था। इसमें एक विशाल प्रासाद बनवाया तथा द्वार पर सपक्ष वृषभ की दो बड़ी मूर्तियां स्थापित की गई। सेनैकेरिब द्वारा निर्मित निनिव का राजप्रासाद वास्तु-स्थापत्य की दृष्टि से अद्वितीय है। इसकी दीवारें तथा छतें कीमती धातुओं, लकड़ियों तथा पत्थरों के काम से सजायी गयी थी। इसकी खपरैल अत्यन्त चमकदार थीं। अशुरबनिपाल के भवनों का पुनर्निर्माण करवाया था।

असीरियन मूर्तिकारों ने शासक तथा देवताओं की मूर्तियां बनायीं। सपक्ष मानव शीश, वृषभ तथा सिंह की मूर्तियाँ बनायी जाती थीं। यहाँ पर सिंह तथा बैलों की ताम्रमूर्तियां तथा सेलखड़ी एवं चूना-पत्थर की सपक्ष वृषभ मूर्तियां बनायी गयीं। यहां की पशु मूर्तियां अत्यन्त सजीव एवं स्वाभाविक है। इन मूर्तियों को देखने से प्रतीत होता है कि पशुओं को मनुष्यों की अपेक्षा अपनी शारीरिक एवं नैतिक श्रेष्ठता का अधिक गर्व है। इनकी दैवी एवं मानवीय मूर्तियां निर्जीव अस्वाभाविक अपरिष्कृत एवं अभद्र लगती हैं। किन्तु अशुरबनिपाल द्वितीय की भीमाकार मूर्ति प्रभावोत्पादक एवं दर्पपूर्ण व्यक्तित्व की स्पष्ट सूचक है।

यहाँ की उद्भूत कला भी समृद्धि थी। एक उत्कीर्ण-भास्कर में पुण्य के देवता मार्दुक को पाप के देवता तियामत के साथ युद्ध करते हुए प्रदर्शित किया गया है। अशुरबनिपाल के समकालीन एक उद्भूत में नदी तट पर बसे हुए शत्रु नगर पर अशुर सेनाओं के आक्रमण का दृश्य उत्कीर्ण है। रक्षक सैनिक सुरक्षा में तैनात प्रदर्शित हैं। शत्रु के स्थल सैनिक हवा भरी मशकों के सहारे नदी पार कर आत्मरक्षा करना चाहते हैं। अशुर सैनिक उन पर शर-संधान कर रहे हैं। यहाँ भीमाकार मानवाकृतियां उत्कीर्ण की गयी हैं। कलख से प्राप्त शम्शी-अदद-सप्तम की चूने पत्थर पर उत्कीर्ण मूर्ति इसी प्रकार निर्मित हैं। असीरियन उद्भूत चित्रों में दैवी एवं मानवीय आकृतियाँ लगभग एक ही समान बनी हुई है। प्रायः सभी व्यक्तियों के सिर बड़े हैं तथा मूँछे एक समान हैं। मानवीय चित्राकृतियों को एक किनारीदार वस्त्र से आच्छादित कर देते थे। शिलापट्टों पर उत्कीर्ण युद्ध एवं मृगया से सम्बन्धित पशु-आकृतियाँ अधिक सजीव आकर्षक एवं मोहक हैं। केवल शान्त मुद्रा को छोड़कर शेष सभी मुद्राओं में वे पशु आकृतियों का चित्राङ्कन कर लेते थे। दुर-शर्रूकिन से मिले सारगोन द्वितीय के समय के अश्व, सेनैकेरिब के निनिव राजप्रासाद में उत्कीर्ण एक घायल शेरनी, अशुरबनिपाल के राजप्रासाद में मिले सेलखड़ी के टुकड़े पर उत्कीर्ण एक मरणासन्न शेर आदि की आकृतियाँ तथा अशुरबनिपाल द्वितीय एवं असुरबनिपाल के शिकार के दृश्य, विश्राम करती हुई एक बाघिन, जाल से छूटे एक सिंह तथा वृक्ष की छाया में विश्राम करते हुए बाघ-बाघिन के चित्र

लिपि एवं साहित्य

असीरियन सैन्य सामरिक योजनाओं में व्यस्त रहे किन्तु लिपि, साहित्य एवं ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता है। उन्होंने बेबिलोनियन कीलाक्षर लिपि को संशोधित एवं परिवर्द्धित कर सुगम एवं लोकप्रिय बनाया। यहाँ सेमेरिक भाषाएँ भी प्रचलित थीं। जिसमें एरेमियन भाषा का उल्लेख किया जा सकता है। एरेमियन भाषा में उत्कीर्ण बहुसंख्यक लेख असीरियन नगरों से प्राप्त हुए हैं। अधिकांश असीरियन साहित्य देववाणी के रूप में मिलते हैं। इन्हीं देववाणियों के माध्यम से असीरियन दैवज्ञ शुभाशुभ घटनाओं की भविष्यवाणी करते थे। कालान्तर में इन्हीं पर आधृत राजकीय लेख लिखे गये। प्रारम्भ में इन अभिलेखों की प्रकृति सरल थी। इनमें भवन-समर्पण का विवरण रहता था। बाद में इनकी प्रकृति ऐतिहासिक हो गयी। अब भवन समर्पण-विवरण के साथ-साथ शासकीय विजयों का भी विवरण दिया जाने लगा। आगे चलकर ऐतिहासिक घटनाओं को तिथि अथवा अभियान के क्रम के अनुसार उत्कीर्ण किया जाने लगा। असीरियन मौलिक साहित्य सृजन में असफल कहे जा सकते हैं, किन्तु पुरातन संस्करणों की सुरक्षा में वे सर्वाधिक सफल माने जा सकते हैं। उन्होंने गिल्गिमेश महाकाव्य' तथा 'विश्व सृजन' की कथा का संस्करण किया। अशुरबनिपाल के समय में निर्मित विशाल ग्रंथाकार के कारण असीरिया विश्व साहित्य में प्रसिद्ध है। इसके निदेशन एवं सरंक्षण में निर्मित निनिव के ग्रंथागार में 22000 मिट्टी की पाटियाँ प्राप्त हुई हैं। इसमें ग्रंथ सूचियां बनायी गयी थीं तथा विषयानुसार इनका वर्गीकरण किया गया था। प्रत्येकपाटी पर एक पट्टी बंधी रहती थी। जिस पर उसका नाम एवं विषय संकेतित रहता था। इनमें साहित्यिक कृतियां बहुत कम हैं। इनमें राजकीय अभिलेखों भविष्यवाणियाँ, औषधि सूचियाँ, ज्योतिष-सिद्धान्त रोग-निवारण नियम, प्रार्थनाएँ एवं स्तुतियाँ बहुसंख्यक हैं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

क्रूर एवं हिंसा के वातावरण में यहाँ केवल युद्ध विद्या या विज्ञान ही प्रगति कर सका था। इन्होंने बेबिलोनियन की भांति वृत्त को 360 अंशों में विभाजित किया था। पृथ्वी पर अक्षांश एवं देशान्तर का निर्धारण कर लिया था। अभिचार एवं अंधविश्वास की वृद्धि के कारण ज्योतिष-अध्ययन को बढ़ावा मिला। खगोलशास्त्रीय आँकड़े एकत्र करने के लिए अधिकारी नियुक्त किये गये थे। पाँच नक्षत्रों का नामकरण इन्होंने ही किया था। सैनिकों के स्वास्थ्य रक्षा के लिए औषधियों का आविष्कार आवश्यक था। पुजारी ही शगुनापशगुन पर विचार करते थे। असीरियनों ने औषधि के उद्देश्य से कुछ पौधों की सूची बनायी थी। इससे वनस्पति शास्त्रीय अध्ययन को प्रेरणा मिली थी। शरीर-रचनाशास्त्र पर भी इनके पास एक विशाल शब्दकोष था। इन्हें रोगों के लक्षणों की जानकारी थी। अधिकांश रोगों को ये प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न मानते थे। रोगों से मुक्ति पाने के लिए आभिचारिक क्रियाओं तथा वीभत्स औषधियों का उपयोग किया जाता था। रसायनशास्त्र का उपयोग वे चर्मोद्योग एवं

शीनाकारी में प्रयुक्त की जाने वाली रासायनिक क्रियाओं में किये थे। सेनैकेरिब के काल में निर्मित एक कृत्रिम जलमार्ग इंजीनियरी ज्ञान का ज्वलन्त प्रमाण है। इसकी सहायता से 4.8 किमी दूर से जल लाने की व्यवस्था थी। इसमें एक स्थल पर जल नदी के ऊपर से लाया गया था।

असीरिया की विश्व-सभ्यता की देन

असीरिया के लोग किसी महान् संस्कृति के निर्माता नहीं वरन् संरक्षक थे। उन्होंने बेबीलोनिया की सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित कर हम तक पहुँचाया। डॉ० एस० आर० गोयल ने लिखा है "अगर असीरिया न होता तो बेबीलोन का बहत-सा ज्ञान-विज्ञान पश्चिमी एशियाई जातियों की समान सम्पत्ति बने बिना विलुप्त हो जाता और आधुनिक इतिहासकार पश्चिमी एशिया के इतिहास का इतने विस्तार से पुनर्निर्माण न कर पाते।" यही उनकी सबसे बड़ी देन थी। इसके अतिरिक्त प्रान्तीय शासन-व्यवस्था असीरिया की देन है। डाक व्यवस्था का प्रचलन उनके द्वारा किया गया।

असीरिया के लोगों ने एक कठोर तथा भयानक सैन्यतंत्र की स्थापना की, जिसके द्वारा उन्होंने एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया था। इनके द्वारा स्थापित सैन्य व्यवस्था अपने समय में सफल सिद्ध हुई। **डॉ० सुशील माधव पाठक** ने लिखा है कि "वास्तव में असीरियाई सभ्यता अपनी सैन्य प्रणाली के लिए ही प्राचीन विश्व के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। असीरियाई सैन्य विशेषज्ञ युद्ध लड़ना, लड़ाई के दांव-पेंच को बहुत अच्छी तरह समझते थे।" असीरिया के सैनिक युद्धकला में बहुत दक्ष थे और युद्ध अभियानों की क्रूरता तथा निर्दयता के लिए विश्व में विख्यात थे। इनकी सैन्य-शक्ति ही इनके विशाल साम्राज्य के पराभव एवं विनाश का मूल कारण सिद्ध हुई।

असीरिया के सम्राटों द्वारा लिखवाई गई मिट्टी की तख्तियाँ प्राप्त हुई हैं जिनसे जरा सभ्यता की ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है। उनकी रक्तपात की नीति एवं हिंसावादी प्रवृत्ति से जनता असन्तुष्ट थी। उनकी इसी नीति के कारण आगे चलकर साम्राज्य का पतन हो गया। फिर भी, बेबीलोनिया की सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा एवं प्रसार के कारण मानव सभ्यता इनकी ऋणी रहेगी।

साम्राज्य का पतन

असीरियन सम्राटों ने निरंकुश नीति के आधार पर 150 वर्षों तक शासन किया। उनकी नीति के कारण राज्य में अशान्ति एवं अव्यवस्था बनी रही और व्यापार तथा कला के विकास का मार्ग भी अवरुद्ध हो गया। यहाँ का सामाजिक जीवन भ्रष्ट हो गया। प्रसिद्ध इतिहासकार **टायनबी** ने अपनी पुस्तक 'स्टडी ऑफ हिस्ट्री' में इस सभ्यता के पतन के कारणों पर प्रकाश डालते हुए लिखा–"असीरियन सभ्यता के विनाश का कारण यह नहीं था कि उसके शस्त्रों पर जंग लग गया था। सैनिक दृष्टि से वे निरन्तर प्रगतिशील व योग्य रहे। उनका विनाश इसलिए हुआ कि उनकी आक्रान्त नीति ने उनको थका दिया और वे अपने पड़ौसियों के लिए असह्य हो गये।"

असीरियन सभ्यता का महत्त्व

पोषित एवं संचित बेबिलोनियन सभ्यता के सांस्कृतिक तत्वों को ग्रहण कर उसमें यथासंभव परिवर्तन एवं परिवर्द्धन कर सुरक्षित रखने का श्लाघनीय कार्य असीरियनों ने ही किया। बेबिलोनियन सांस्कृतिक तत्त्वों के अधिग्रहण एवं संश्लेष के बावजूद भी इनकी मौलिकता में कोई कमी नहीं आयी। इसीलिए असीरियन सभ्यता को बेबिलोनियन सभ्यता की अनुकृति तो माना जाता है। पर यह अनुकरण आसन्नानुकरण ही था अन्धानुकरण नहीं।[3] इनके द्वारा विविध क्षेत्रों में किये गये नूतन अनुभवों एवं आविष्कारों से परवर्ती विश्व निस्संदेह प्रभावित हुआ। इतिहास में सर्वप्रथम सैनिक शक्ति के बल पर एक अति विस्तृत साम्राज्य की स्थापना की संभावना को असीरियनों ने ही यथार्थ रूप में परिवर्तित किया था। कालान्तर में यह पारसीकों एवं मेसीदोनियन के लिए यह आदर्श बना। असीरियन सैन्यवाद का प्रभाव परवर्ती हिब्रू धर्म के एकेश्वरवाद पर निर्विवाद रूप से पड़ा। प्राचीनतम एशियाई वास्तुकला की पूर्णता असीरियन युग में ही दिखलाई पड़ती है। इनमें प्रयुक्त स्तम्भ-निर्माण कला वास्तविक रूप से पारसीक एवं यूनानियों के लिए प्रेरणा स्रोत माना जा सकता है। डॉ. भगवत शरण उपाध्याय भारतीय अशोककालीन स्तम्भों पर उत्कीर्ण सिंह एवं वृषभ आकृतियों पर असीरियन प्रभाव मानते हैं। असीरियन ज्योतिषशास्त्र एवं चिकित्साशास्त्र ने यूनानी ज्योतिष शास्त्र तथा प्रकृति विज्ञान को प्रेरणा प्रदान की। किन्तु इसे डॉ. वी.एस. अग्रवाल स्वीकार नहीं करते हैं।